भाग–1

बच्चों के पूर्वज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल

आइए हम रीना जी की कक्षा में चलते हैं और देखते हैं कि वह किस तरह बच्चों के साथ काम कर रही हैं।

शिक्षिका "जब मुझको साँप ने काटा" (एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तक रिमझिम कक्षा–3) कहानी पढ़ा रही हैं।

- रीना जी रिमझिम कक्षा–3 की पाठ्यपुस्तक से एक कहानी "जब मुझको साँप ने काटा" का शीर्षक ज़ोर से पढ़ती हैं।
- फिर वह बच्चों से पूछती हैं कि ''अच्छा बताओ किस–किस ने साँप देखा हैं?'' तुरंत ही कक्षा के कई बच्चों के चेहरों पर चमक आ जाती है, और पाँच–छः बच्चे उत्साहित होकर बोलते हैं ''मैंने''। शिक्षिका उनमें से दो बच्चों को अपना अनुभव सुनाने को कहती हैं।
- वह कहानी से जुड़े बहुत से खुले छोर वाले सवाल भी पूछती हैं , जैसे कि –''क्या तुम्हारे घर के आस–पास कभी साँप निकला है?'' कई और बच्चे अपने परिवार से सुने हुए किस्से बताने को उत्सुक हैं।
- वह ध्यान रखती हैं कि सभी बच्चों को अपने अनुभव व विषय से जुड़ी जानकारी बताने का मौका मिले।

- पाठ जब आगे बढ़ता है और बर्र की बात आती है, तो वे बर्र का चित्र दिखाते हुए उसके बारे में पूछती हैं । वे कई सवाल पूछती हैं, जैसे कि –
  1. तुम इसे किस नाम से बुलाते हो ?
  2. तुमने यह कहाँ देखा है ?
  3. क्या तुम्हारे घर में किसी को बर्र ने काटा है ?
  4. बर्र के काटने पर घरवालों ने क्या किया? आदि।
- वे उन बच्चों को बोलने का मौका देती हैं जिन्होंने पहले नहीं बोला।

गतिविधि

आपके अनुसार, रीना जी की कक्षा में हो रही बातचीत की सीखने–सिखाने में क्या भूमिका है:

1. बातचीत के द्वारा बच्चों के अनुभवों को कक्षा में शामिल करने से वे कक्षा से लगाव महसूस करते हैं।
2. किसी पाठ को बच्चों के पूर्व–अनुभव से जोड़ा जाना उन्हें पाठ की गहरी समझ बनाने में मदद करता है।
3. इस तरह की अनुभव पर आधारित बातचीत, बच्चों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने में मददगार है।

(सही विकल्प :1, 2, 3)

सीखने में बच्चों के पूर्वज्ञान और अनुभव को शामिल करना एक आवश्यक शर्त है। हमारे मस्तिष्क में सीखना तभी होता है जब वह किसी पूर्व जानकारी या अनुभव से जुड़ सके। इसीलिए बच्चों की दुनिया को आधार बनाकर ही सीखने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है।

विचार करें!

रीना जी ने बच्चों के अनुभव पर चर्चा की। आपके अनुसार, बच्चे अपने पूर्व अनुभव व परिवेश से किस तरह की समझ व जानकारी कक्षा में लेकर आते हैं ?

1.1 पूर्वज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल क्यों ज़रूरी है?

बच्चे अपने सामाजिक व प्राकृतिक वातावरण के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। जैसे कि जिन बच्चों के घरों में खेती–बाड़ी का काम होता है, उन्हें पेड़–पौधों व फसलों के बारे में बहुत कुछ पता होता है। इसका इस्तेमाल नए ज्ञान अर्जन के लिए किया जाना चाहिए।

बच्चों के पूर्वज्ञान, उनके परिवेश और उनकी भाषा को कक्षा में स्थान देने पर वे कक्षा में सहज महसूस करते हैं और कक्षा की प्रक्रिया से आसानी से जुड़ पाते हैं।

बच्चे किसी भी नए अनुभव को पहले अपनी वर्तमान समझ से जोड़ते हैं और इसके आधार पर नए अनुभव को समझते हैं।

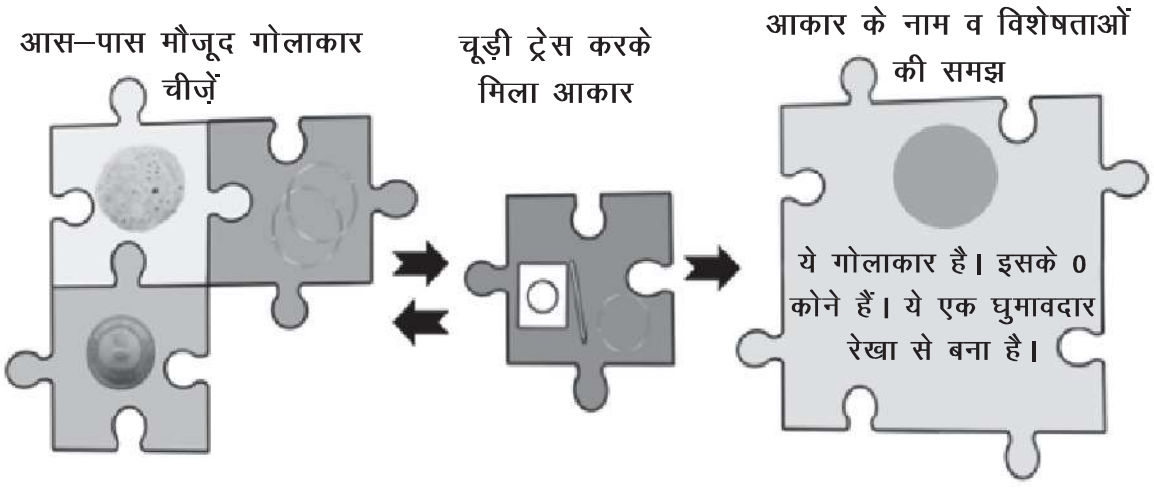

पूर्व जानकारी/कौशल + नयी जानकारी/कौशल ➡ नया अधिगम

1.2 बच्चों के पूर्वज्ञान को बढ़ावा देने के लिए कुछ रणनीतियाँ

रणनीति	गतिविधियाँ	उदाहरण
पाठ से पहले पूर्वज्ञान को जानना व सक्रिय करना	विषय–वस्तु पर बातचीत	यदि पाठ यात्रा से जुड़ा है तो बात करना कि वह कभी कहीं बाहर गए हैं ? कैसे गए ? कहाँ गए ? वहाँ क्या अच्छा लगा ? आदि
	आवश्यक अवधारणा को विभिन्न तरीकों से दोहराना	यदि हिन्दी भाषा का कोई पाठ रंगों के बारे में है तो खेल के माध्यम से हिन्दी में रंगों के नाम दोहराना।
बच्चों का ज्ञान–भंडार बढ़ाना	सामान्य जानकारी के लिए नए अनुभव व बातचीत	खुले में जाकर पेड़–पौधों का अवलोकन और पत्तों और फूलों के रंग, आकार, आदि पर चर्चा करना।
	किसी नई अवधारणा की शुरुआत में उससे जुड़े ठोस अनुभव	स्थानीय मान के लिए, विभिन्न वस्तुओं के 10–10 के समूह बनाना जैसे फूलों , मोतियों, बटनों, तीलियों, आदि के समूह

कक्षा में किए जाने वाले काम को घर / समुदाय से जोड़ना	किसी विषय पर घर या समुदाय में अवलोकन / बातचीत करना और कक्षा में उस पर फॉलो–अप	त्रि–आयामी आकृतियों के लिए घर से ठोस वस्तुओं जैसे गत्ते के खाली डिब्बे, लूडो का पासा, गेंद, आदि इकट्ठा करना व कक्षा में आकृति के आधार पर वर्गीकृत करना ।
	स्थानीयलोक कथाओं, पहेलियों और गीतों का प्रयोग	स्थानीय भाषा में पहेलियाँ पूछना, अंकों के नाम प्रयोग करना, लोक कथाएँ सुनाना, आदि।

भाग–1 के मुख्य बिंदु

- बच्चे किसी नए अनुभव से तभी सीख पाते हैं जब उन्हें बच्चों के पूर्वज्ञान व अनुभवों से जोड़ा जाए।
- यह उन्हें कक्षा से जोड़ने के लिए भी महत्वपूर्ण है।
- कक्षा में पूर्वज्ञान को बढ़ावा देने की कुछ रणनीतियाँ हैं: पूर्वज्ञान को जानना व पाठ से पहले सक्रिय करना, बच्चों का सामान्य ज्ञान बढ़ाना, कक्षा के काम को घर व समुदाय से